वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सर्वोदय दर्शन का औचित्य

✧ डॉ. जयश्री त्रिवेदी

गाँधी व विनोबा जी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय की अवधारणा प्राचीन समय से ही भारत में प्रचलित थी, पूर्व में जैनाचार्य समंतभद्र ने सर्वोदय तीर्थ की भावना अपने काव्य में इस प्रकार से व्यक्त की थी–

'सर्वपदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमदं तवैव।'

अर्थात् हे प्रभु! सारी विपदाओं का अन्त करने वाला आपको ही यह अत्यन्त व्यापक सर्वोदय तीर्थ है, इस प्रकार 'सर्वोदय' शब्द की भावना व कल्पना का व्यक्तिगत जीवन में चिन्तन प्रयोग और विनियोग प्राचीन काल से होता आया है।

सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास ही सर्वोदय है, भारत का प्राचीन आदर्श भी यही था–

'सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्व भद्राणि पश्यन्तु भा कश्चिद दुःखभाव्युयात्॥'

अर्थात् इस सर्वे शब्द में न केवल मानव समाज का ही बल्कि जानवरों का भी समावेश कर दिया, जिन्हें मानव ने अपने परिवार का एक अंग मान लिया था। मनुष्य गाय, बैल का उपयोग करता था अतः उनके सुख व संरक्षण की भी चिन्ता करता था।

सर्वोदय की विचारधारा के प्रतिपादक, विद्वानों, राजनीतिज्ञों तथा सर्वोदयी विनोबा जी ने इसे भूदान, ग्रामदान, सम्पत्ति दान, बुद्धिवान, श्रमदान, जीवनदान आदि साधनों के माध्यम से व्यापक रूप से समाज के हितार्थ प्रस्तुत किया।

सर्वोदय मनुष्य को अपने निजी शुद्ध व तुच्छ स्वार्थों से ऊपर उठने का सिद्धान्त है, इसका लक्ष्य व्यापक है। जिसमें सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण के लिये हमें परिवार, स्वजन, ग्राम, नगर, जाति, सम्प्रदाय, धर्म व राष्ट्र को विश्व परिप्रेक्ष्य में अवस्थित करने का संदेश दिया है। सर्वोदय का आदर्श महान है, उस आदर्श का अपना महत्त्व है, इस सम्बन्ध में सर्वोदय विचारक कृष्ण भट्ट ने लिखा है कि सबका उदय कोरा स्वप्न, कोरा आदर्श नहीं है, वह आदर्श व्यवहार है, वह अमल में लाया जा सकता है, सर्वोदय का आदर्श ऊँचा है यह ठीक है परन्तु न तो वह अप्राप्य है और न असाध्य है, वह प्रयत्न साध्य है। जिसे प्राप्त किया जा सकता है।

सर्वोदय एक गतिशील दर्शन है, जो किसी एक देश या काल के लिये नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिये है। विनोबा जी का यह मानना था, ''सर्वोदय भारत का अपना शब्द है और भारत की अपनी वस्तु है पर ऐसा शब्द या सही वस्तु नहीं है जो किसी दूसरे देश या काल में लागू न हो सके। देशकाल की परिस्थितियों के भेदानुसार उसकी बाहरी पद्धति में अन्तर होता रहेगा, लेकिन उसका आन्तरिक रूप शाश्वत रहेगा।'' निश्चित ही सर्वोदय की यह विचारधारा निरन्तर मूल्यों पर आधारित होने के कारण शाश्वत प्रासंगिक व महत्त्व की विचारधारा है।

रचनात्मक कार्यों के अन्तर्गत सर्वोदय विचारों की प्रासंगिकता के रूप में भूदान, ग्रामदान आन्दोलनों व कार्यक्रमों से, ऐसा वातावरण तैयार किया गया, जिसके आधार पर भू-स्वामित्व की व्यवस्था में कानूनी ढंग से सुधार किया जा सके। पं. जवाहरलाल नेहरू ने इसी योगदान के सम्बन्ध में कहा था कि सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम जो इसी आन्दोलन का निकला, वह उसके द्वारा निर्मित वातावरण का है, जो भूमि व्यवस्था में सुधार के लिये कानून बनाने में सहायक होता है, उस विषय में वह व्यक्तियों के मानस को ही बदल देता है। उन्होंने मानव जाति के सम्मुख ऐसे महान् आदर्श रखे, जिनकी ओर बढ़ने का प्रयत्न, अन्यान्य देशों द्वारा भी किया गया।

सर्वोदय दर्शन का मूल आधार मानवीय हृदय परिवर्तन है, इस क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सन् 1972 में चम्बल घाटी के दुर्दान्त दस्युओं आत्मसमर्पण के रूप में घटित हुआ। जिस भीषण समस्या का समाधान, पुलिस, शक्ति व बल प्रयोग द्वारा न हो सका उसका निराकरण सर्वोदय नेता के रूप में विनोबा जी ने किया। आचार्य भावे के प्रयत्नों से ही मानसिंह के पुत्र दस्यु तहसीलदार सिंह व उसके अन्य साथी डाकुओं ने विनोबा जी के समक्ष आत्मसमर्पण किया। य ह आत्मसमर्पण हृदय परिवर्तन का अनुपम उदाहरण था।

सर्वोदय आध्यात्मिक आदर्शवाद से प्रेरित होकर समाज व राजनीति का पुनः निर्माण बौद्धिक आधार पर करता है जिसमें प्रत्येक समस्या का हल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से किया जाए, प्रेम व अहिंसा से समस्या सुलझायी जाये क्योंकि सर्वोदय का मुख्य उद्देश्य समाज की भलाई है।

वर्तमान समय में सर्वोदय का विचार उस सर्वोत्तम रामराज्य की स्थापना करना रहा, जिसमें लोगों के नैतिक चरित्र को उठाया जाए तथा उनमें धैर्य व साहस की भावना से कार्य किया जाये।

सर्वोदय का आदर्श ऐसे जातिविहीन, वर्गविहीन व शोषण विहीन समाज की रचना है जिसमें, व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास कर सके। आज जो लोग राजसत्ता, शास्त्रसत्ता व धनसत्ता में लिप्त हैं, जिससे मानवीय शक्ति की खोज का उपक्रम

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शा.पी.जी. कॉलेज, दतिया (म.प्र.)

अपरिहार्य हो गया है और यह सर्वोदय द्वारा ही संभव है, विनोबा जी ने सर्वोदय दर्शन को साकार रूप देने के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। उन्होंने मानवता को प्रेम के नियम से प्रतिबद्ध करने का प्रयास किया।

वर्तमान संदर्भ में सर्वोदय की प्रासंगिकता इसमें है कि समर्पित सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं को तन, मन, धन से निष्ठा व लगन के साथ कार्य करना होगा। वर्तमान में सर्वोदय आन्दोलन को आगे बढ़ाने हेतु युवकों के बीच तरुण शान्ति सेना व युवा संघर्ष वाहिनी को संपोषण देना होगा, साथ ही किसान, मजदूर, आदिवासी नारी आदि वर्गों के बीच रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ जाना होगा। समाज व राष्ट्र में बिखरी शक्ति को एकत्रित करना व शक्ति के बीच नवीन आयामों को ढूँढ़ना होगा, तभी सर्वोदय देवता का पृथ्वीपर अवतरण होगा। सर्वोदय मानव को दैवी चेतना की सर्वोच्च ऊर्जा का एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक अंग मानता है। आज विश्व की यह आवश्यकता है कि उसके निवासी और जागतिक मानवीय परिवार मिलकर एक ऐसा विश्व निर्मित करें जिसमें भुखमरी तथा अलगाववादी धर्म न रहे, उसे जीवन के ऐसे आध्यात्मिक आयाम की आवश्यकता है, जिसमें लोकशाही जीवन पद्धति सामाजिक न्याय और समानता संभव हो। सर्वोदय मानवीय सम्बन्धों को नूतन गति देने वाला मूल तत्त्व है।

निश्चय ही यह कहा जा सकता है गाँधी व विनोबा जी के सर्वोदय विचारों की प्रासंगिकता इक्कीसवीं सदी में भी होगी, दल निरपेक्षता सर्वानुमति व ग्राम स्वराज्य के आधार पर विकसित लोक नीति आज भी प्रासंगिक और उपयोगी है और अंत में यह कहना होगा–

'गंगा की कसम यमुना की कसम यह ताना बाना बदलेगा।
तुम खुद बदलो, तुम खुद बदलो तब तो जमाना बदलेगा॥'

वर्तमान समय में विनोबा जी की सर्वोदय के विचारों की पावन धारा का प्रसार देश के कोने-कोने में हो रहा है, यही उनके सर्वोदय विचारों की सार्थकता व महानता है।

संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थ :-

1. दुबे श्यामा प्रसाद - आधुनिक राजदर्शन, पृ. 70
2. अवस्थी एवं अवस्थी - आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, पृ. 494
3. जयप्रकाश नारायण - समाजवाद से सर्वोदय की ओर श्री भावेद्वारा लिखित आमुख
4. सर्वोदय जगत पत्रिका - 1 से 30 सितम्बर 1995, पृ. 12
5. सर्वोदय जगत पत्रिका - सर्व सेवा संघ राजघाट वारानसी 16 से 30 अप्रेल 1996
6. तदैव - 1 से 15 दिसम्बर 1994, पृ. 5